समकालीन कहानीकार उदय प्रकाश

*प्रा. देवीकनंदन नथ्थू महाजन

समकालीन कथा साहित्य में उदय प्रकाश अब कोई नया नाम नहीं है। दर्जनों कहानियाँ लिखकर सकालीन कथाजगत् में अपना निर्माण करनेवाले उदय प्रकाश हिन्दी के जाने-पहचाने। साहित्याकरों में अग्रणी कथाकार है। पेशे से पत्रकार तथा फिल्मकार उदय प्रकाश को समकालीन कथा जगत का नयी पीढ़ी का प्रतिनिधीक कथाकार कहा जाता है। उनकी कहानियों में युवा मन की दव्‌दवात्मकता, उलझन, कुंठा, यौन-सम्बन्ध, भटकाव, बिखराव, आशा-आकांक्षा और सपनों के विविध रूप मिलते हैं।

उदय प्रकाश का जन्म-उदय प्रकाश का जन्म स्वतंत्र भारत के मध्य प्रदेश के शहड़ोल-जिसे अब अनुपपुर नामसे पहचाना जाता है-जिले के सितापुर गांव में 1 जनवारी 1952 में हुआ। उनके पिता का नाम प्रेमकुमार सिंग तथा माता का नाम गंगा देवी था। ''उदय प्रकाश की माता को श्वास नली का कैंसर था। लगभग एक वर्ष तक कैंसर से लड़ते-लड़ते वह धीरे-धीरे मृत्यु के करीब जाती रही और उदय की बाहर वर्ष की अवस्था में ही 30 दिसम्बर 1964 में ही उनको छोड़कर परलोक की यात्रा के लिए निकल पड़ी। माँ की मृत्युबाद पाँच वर्ष में ही उदय की सत्रह वर्ष की अवस्था में ही पिता उनके कंधोपर छोटी बहन स्वयंप्रभा का भार सौपकर 9 सितंबर 1969 में स्वर्ग लोक में चले गये।'' [1] माता-पिता दोनो की मृत्यु असमय तथा कैंसर से होने के कारण उदय प्रकार को परिस्थिती ने बचपन से ही प्रतिक्रिया वादी बना दिया।

उदय प्रकाश की शिक्षा-माता-पिता की असमय मृत्यु तथा अपने से छोटी बहन स्वयं प्रभा की जिम्मेदारियों को निभाते हुए एवं बचपन से अध्ययन के प्रति दिलचप्सी होने के कारण ''पांचवी तक की प्रारंभिक शिक्षा सीतापुर गाँव में ही हुई। छठी से लेकर नौंवी तक पढ़ाई अनुपपुर गाँव में हुई। उच्च शिक्षा के लिए बडे शहर जाकर सागर विश्व-विद्यालय से विज्ञान में स्नातक तक अध्ययन करके वहीं 'आ. नन्ददुलारे बाजपेयी' स्वर्णपदक के साथ हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर किया।''[2]

शोधकार्य-''सन 1974 के पहले प्रत्येक विश्व-विद्यालयों में एम.ए. में एक डेझरटेशन पर पेपर होता था। 'मोहन राकेश और उनके बीज नाटक का रंगमंचिय अध्ययन' विषयपर डॉ. शिवकुमार मिश्र के निर्देशन में लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। दूसरी बार जे.एन.यु. दिल्ली में 1974-75 में डॉ. नामवर सिंह के निर्देशन में'' 'साहित्यक और समाजशास्त्रीय संबंधों में अंतर' इस विषयपर लघुशोध प्रबंध प्रस्तुत किया। 'स्वातंत्रोत्तर कृषि संबंधो में परिवर्तन और हिन्दी उपन्यास' इस विषय पर डॉ. नामवर सिंह तथा डॉ. सी.पी. जोशी के निर्देशन में जे.एन.यु. दिल्ली में पीएच.डी के लिए पंचीकरण किया था, उसके चार अध्याय भी पूरे किये थे, लेकिन सहायक प्राध्यापक की नौकरी मिलने के कारण यह शोधकार्य अधूरा छोड़ दिया।''

पारिषारिक जीवन-''उदय प्रकाश की पत्नी का नाम कुमकुम सिंग है। उन्होंने जे.एन. यु. दिल्ली से फ्रेंच तथा स्पेनिश भाषाओं में स्नातकोत्तर कर सोलह वर्ष तक सरकारी नौकरी की है, सरकारी नौकरी करते-करते तथा पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते-निभाते उनके जीवन रूप बेलपर दो पुष्प खिले। एक है सिद्धार्थ, जो जर्मनी में रहता है, उसने दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.एस.सी. करके जर्मन से इन्वायरमेंटल सामान्य में एम.एस्सी. करके वही से पीएच.डी. कर रहा है। दूसरा बेटा शांतनू आय.टी. की पढाई करके एक युरोपियन कम्पनी में नोकरी कर रहा है।''[4]

साहित्यर कार्य एवं पुरस्कार-उदय प्रकाश ने मध्य प्रदेश शासन संस्कृति विभाग, भोपाल में विशेष अधिकारी के रूप में कार्य किया है। इसी अवधि में उन्होंने दिनमान साप्तहिक पत्रिका का उपसंपादक का भार भी संभाला है। आज भी सिनेमा तथा दूददर्शन के लिए लेखन कर रहे है। 'ताना-बाना', बिज्जी का खजना, 'कृषिकथा' जैसी स्वयंलिखित तथा निर्देशित धारावाहिक का निर्माण किया है। 'हीरालाल का भूत' कहानी पर आधारित 'उपरांत' तथा महाकाव्यात्मक कहानी 'मोहनदास' पर आधारित 'मोहनदास' फिल्म प्रदर्शित हुए है। ''मोहनदास'' फिल्म को ऑस्ट्रीया का 2009 को प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुआ है।5

उदय प्रकाश के माता-पिता की मृत्यु असमयपर कैंसर से होने के कारण वे अत्यधिक प्रतिक्रिया वादी बन गये। उनकी अपने साहित्य के विषय में स्पष्ट धारणा है कि- ''कैंसर और मृत्यु के आसन्न आगमन को अतिक्रमित करने या उससे टकराने की इच्छा ही मेरी कविताओं और कहानियों का मूल उद्‌गम स्त्रोत हैं।''7 उनकी कहानियों की प्रेरणा पीड़ा और वेदना है। उनको जन्मभर समाज के द्‌वारा केवल पीड़ा ही मिली है। अत: वे स्वयं स्वीकारते है- ''सभी बड़ी कलाकृतियों का उत्सव वहाँ से होता है जहाँ मनुष्य की लाचारी और बेबसी भयावह होती है, जैसे कैंसर या प्लेग।।'' 8

समकालीनता से अभिप्राय-हिन्दी साहित्य के इतिहास में कहानी की एक लम्बनी परम्परा है। आज का युग भौतिकवादी युग है। अत: आधुनिक कहानीकारों ने जीवन को खंड रूप में देखा है। युगीन जीवन की जटिलता, बौद्धिक तनाव तथा जीवन में भागदौड़ की स्थिति के कारण मनुष्य कम से कम समय में अधिक से अधिक प्राप्त करना चाहता है इसिलए कहानी विधा में गद्य की अन्य विधाओं की तुलना में अधिक लोकप्रिय है।

जैनेन्द्रकुमार के आने के बाद हिन्दी कहानी में नया मोड़ आया इसके बाद मार्क्सवाद से प्रेरित होकर यशपाल ने कहानियाँ लिखी। मनो

* रूख्मिणीताई कला एवं वाणिज्य महिला महाविद्यालय, अमलनेर, ज़ि जलगांव

विश्लेषण वादी कहानी कारों में अज्ञेय का नाम प्रथम लिया जाता है। नई कहानी में कमलेश्वर को लिया जाता है जिन्होंने महानगरीय परिवेश को अभिव्यक्त करते हुए मानवीय संवेदना को अपनी कहानियों का विषय बनाया है। स्वतंत्रता के बाद हिन्दी कहानी परिवेशगत निर्गम सच्चाइशों और चुनौतियों की बीच ही स्वतंत्र स्वरूप स्वीकारती है। सन् 1947 को भारत को राजनैतिक आजादी प्राप्त हुई। उस व्यवस्था को जैसे के तैसे रहने के कारण तत्कालिन गरीब मध्यवर्गीय समाज शोघित होता रहा और पूँजीवाद की जड़े गहरी होती गई। परिणामस्वरूप यह खाई अधिक बढ़ती गई। समझदार वर्ग इस खाई को सहते हुए केवल शासक वर्ग को कोसता रहा। उसी समय पश्चिमी सभ्यता का स्वीकार होने लगा और समाज एक कृत्रिम आधुनिकता में घिरा गया। वैसे तो आधुनिकता एक विकासशील दृष्टि है जो व्यक्ति में उदगार तार्किकता और वैज्ञानिक सोच पैदा करती है।[9]

समकालीनता के संदर्भ में आधुनिकता शब्द भी पर्यायवाची के रूप में विचारणीय है। आधुनिकता पूरे समाज की नई गतिविधियों की प्रक्रिया से आरंभ होती है।''समकालीनता और आधुनिक एक दूसरे के पर्यायवायीन होते हुए भी दोनों अन्योन्याश्रित है।''[10] इसी आधुनिकता को स्वीकारते हुए स्वातंत्र्योत्तर कहानीकारों की कहानी को नई कहानी के नाम से अभिहित किया गया जिसमें सन् 1960 के बाद के कहानीकार आते है। इन कहानीकारों ने कहानी को कल्पना के क्षेत्र से बाहर निकालकर यथार्थ क्षेत्र को अपनाया और नये-नये प्रयोंगों को स्वीकारते हुए भारतीय समाज के मध्यवर्ग की समस्याओं को अभिव्यक्ति करने लगे।''कथा समीक्षक जय प्रकाश ने लिखा है-जान पड़ता है कि नया कथाकार अपने यथार्थ का सामना होते ही मारे उत्तेजना के उसपर झपड पड़ा है और उसे लेकर युरेका-युरेका शैली में दौड़ रहा है।''[11]

'समकालीनता' का वास्तविक अर्थ होता है। अपने समय का। अर्थात् अपने समय के प्रति ईमानदार होना। अपने समय के प्रति व्यक्ति तभी ईमानदार होता है तब वह आनेवाले संकटों से न डर यथार्थ भावबोध को व्यक्ति करता है। नालंदा अद्यतन कोश के अनुसार ''समकालीन शब्द 'सम' उपसर्ग को कालीन, काल की अवधारणा से जुड़ा हुआ, एक विशेषण में लगाकर बनता है, जिसका अर्थ है-जो एकही समय में हुआ हैं।''[12] समकालीनता के लिए अंग्रेजी में कन्टेम्पैरीनीटों कन्टेमपरी शब्द भी चलता है जिसका अर्थ होता है एक ही समय , उसी समय में रहने वाले।[13] आदर्श मराठी शब्द कोश में समकालीन के लिए एकाकालीक समकालीन एकाच वेळचे के रूप में दिया है। [14] हिन्दी भाषा कोश में एकही समय में रहने वाला [15] बताया गया है।इसी प्रकार डॉ. विश्वभरनाथ उपाध्याय समकालीन, समकालीन का अर्थ विस्तार से बताते है-समकाल शब्द यह बताता है कि काल के इस प्रचलित खंड या प्रवाह में मनुष्य की स्थिति क्या है? उसे उलटकर कहे तो कहेंगे कि मनुष्य की वास्तविक स्थिति देखकर या उसे अंकित, चित्रित करके ही इस समकालीनता की अवधारणा को समझ सकते है। शर्त यही है कि लेखक आज के देश, काल, स्थिति मनुष्य के अंकन में वस्तुगत रहे यानी उसके चित्रण की विधि कोई भी हो लेकीन उससे जो मानव बिंब उभरता हो वह वास्तविक जीवन के विकट हो।[16]

इसके बाद की दरियाई घोड़ा से लेकर अंतिम कहानी से टेपचू तक सभी प्रभावशाली है।'दरियाई घोड़ा' उनके निजी जीवन की कहानी है। विजय मोहन सिंह ने प्रस्तुत कहानी के विषय में कहा है- ''संग्रह की शीर्षक कहानी 'दरियाई घोड़ा' बेहद निजी किस्म की कहानी है। इतनी निजी कि अगर कोई कहे कि यह किसी अन्य कहानी से बेहतर प्रभावित है तो कहानीकार को उबल पड़ने का पूरा अधिकार है। लेकिन जो लोग..... इस पर निर्मल वर्मा की अत्यंत चर्चित कहानी 'बीच-बहस में' का प्रभाव है।.... पुत्र के मन में उस विकृति तथा उस विकृति को साक्षात प्रतिरूप पिता के प्रति एक जुगुप्सा है तथा 'ददद्दू तिवारी गणनाधिकारी' प्रेमचंद की 'नमक का दरोगा' की याद दिलाती है।'' 17 दरियाई घोड़ा संग्रह की कहानियों के संदर्भ में धीरेन्द्र अस्थाना कहते है-''ये कहानियाँ समाज के सबसे निचले लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण आदमी की मुश्किलों और चीख को नहीं उसकी आस्था जुगुप्सा और अपराजेयता के साथ-साथ स्थितियों के प्रत उसके दुविध रहित स्वयं को रेखांकीत करती है।''[18] संग्रह की 'टेपचू' कहानी मनुष्य की जीजीविषाको उद्घाटित करती है। अपने अंदर की जीजीविषा और अदम्य संघर्षशीलता टेपचू में दिखाई देती है।

तिरिछ संग्रह में नेलकटर छपन्न तोले का करधन, हिरालल का भूत, तिरिछ प्रमुख कहानियाँ है। तिरिछ में हमारे समाज की भ्रर्त्सना है। इन कहानियों में फंतासी है। तथा निर्मम वस्तुपरक बयान भी है।'हीरालाल का भूत' का हीरालाल दलित चेतना का प्रतीत है। जो केवल सहता है। उदय प्रकाश स्वयं स्वीकारते हैं-हीरालाल का भूत कहानी दलित चेतना के साथ-साथ सामंती शोषण और उसकी अमानवीय परिणतियों की कहानी मानता हूँ।''[19]

'और अंत में प्रार्थना' संग्रह में 'थर्ड डिग्री' कहानी हमारी प्रणाली, पुलिस, उनसे जुड़े हुए गुंडे, उनके चक्रव्यूह में फँसा आम मनुष्य जो न्याय की भीक मांगते-मांगते तडपता हुआ मरना पसंद करता है मगर पुलिस यंत्रणा तथा न्याय पालिका के दरवाजे नहीं खटखटाता। संग्रह की शीर्षक कहानी 'और अंत मे प्रार्थना' लंबी कहानी है। उससे उच्च शिक्षा प्राप्त डॉ. वाकरणकर अपने सिद्धान्तों को तिलांजली नहीं देता, मात्र उसकी ईमानदारी और सच्चाई के कारण उन्हें ऐसी जगह पर नियुक्त किया जाता है जो आदिवासियों का पहाडी इलाका है। डॉ. वाकणकर वहाँ भी तन्मयता से नौकरी करता है। उनके बड़े अधिकारी उसे रिश्वतखोरी, चापुलसी करने के लिए विवश करते हे। वह जाता है पर गतर रास्तेपर नहीं चलता।

'पॉलगोमरा का स्कुटर' कहानी राम गोपाल सक्सेना की जीवन गाथा है। वह औषनिवेशिक भूमंडलीकृत उपभोक्तावादी प्रवृत्ति का प्रतीक है। वह अपने रामगोपाल सक्सेना नाम को उलटकर एक कवि की हैसियत से जीवन जीता है। वह किश्तों पर स्कूटर खरिदता है। पर उसे चलाना नहीं आता।''इस तरह स्कूटर प्रतीकात्मक रूप में इन नव औपनिवेशिक भूमंडलीकृत उपभोक्तावादी बाजारू साम्राज्यवाद का सशक्त प्रतिरोध है।''[20] प्रस्तुत संग्रह की 'वारेन हेस्टिंग्ज का सांड' कहानि आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता वाद को एक सांस्कृतिक हमले के रूप में देखती है।[21] वारेन हेस्टिंग्ज का सांड कहानी में अपने देशी सांडों की प्रवृत्ति पर प्रहान किया है।'हिन्दुस्थान का एक वर्ग ऐसा है जो जल्द से जल्द अमीर बनना चाहता है। वह प्राचीन काल के राम के गुलामों में भी ज्यादा गुलाम है। उनमें जयादातर ऊँची जात के लोग है।...... वे सिर्फ अपने नश्ल और त्वचा के रंग के अलावा बाकी सब चीजों में अंग्रेजी के हम जाद है।'[22] ब्राह्मणोत्तर अपने पर होनेवाले अन्याय का बदला लेना

चाहता है।''अब पूरी ताकद के साथ दबी-कुचली जातियों की समूची प्रतिहिंसा के साथ शताब्दियों में उनके प्रति हुए अन्याय का बदला ले रहा था।'' 23 आलोच्य कहानी का राहुल दलित होने का आरोप उदय प्रकाश पर लगाया जाता है। मात्र ''मेरे लिए सत्ता की बनावट में जो ड्रिप्राईट है वो दलित है।''[24]

'मेंगोसिल' महानगरीय परिवेश का यथार्थ दस्तावेज है। मंगोसिल, भूख और गरिबी की बिमारी का नाम है जिसे यह रोग लगा उसका पिछा नहीं छोड़ता। इस रोग में सिर बड़ा होता है। ''हमारा सिर, जी हाँ वहीं सिर जो हर जिन्दा आदमी के कंधों के ऊपर होता है। वह बड़ा हो गया है। और लगातार बड़ा होता जा रहा है। डॉक्टर कहते हैं कि यह एक लाईलालज रोग है........और उसका नाम है मेंगोसल''[25] कहानी का चंद्रकांत का बेटी सूरी इस रोग का शिकार हुआ है। सूरी के दवारा महानगरीय परिवेश का दारूण रूप अभिव्यक्त होता हे।''मुझे सडकपर चलता देखकर लोक चौकते है....... मै तो असल में उस गंदे नाले का केंचुआ था, जो एक रात सरकता हुआ मम्मी के पेट में घुस आया था।'' 26 मेंगोसिल वास्तव में कोई बिमारी नहीं परंतु वह गरिबी की बीमारी है जो उनके घरों में गंदगी और कुपोषण के बीच पैदा होती है।'मंगोसिल' कोई कहानी न होकर वर्णनात्मक निंबंध है।

'मोहनदास' वर्तमान जीवन में चलेनवाले यथार्थ को उजागर करनेवाली कहानी है। वर्तमान समाज में कई मोहनदास मिलेंगे जो राजनीतिक, सामाजिक व्यवस्था में चलनेवाली रिश्वतखोरी का पूँजीवादी व्यवस्था का शिकार हुआ है। 'मोहनदास' मोहभंग की कहानी है, 'मोहनदास' को गौर से देखो तो उसका नाम ही मोनदास है। वह कभी प्रतिरोध नहीं करता। 'मोहनदास' कहानी के विषय में 'किसलय' ने लिखा है ''उदय प्रकाश की कहानी 'मोहनदास' युगीन आख्यान' कहानी के विषय में 'किसलय' ने लिखा है। ''उदय प्रकाश की कहानी' 'मोहनदास' युगीन आख्यान है। कथा के कलेवर में औपन्यासिक विस्तार है। विद्रूपित यथार्थ का जीवतं और मार्मिक दस्तावेज है। उदय प्रकाश ने बहुत कारूणिक कथा कही है जो अथक परिश्रम करते हुए भारत का आम निरिह कातर नागरिक रोज-ब-रोज भोगता है।''[27] मोहनदास कोई मनगडद कहानी के द्वारा पूरी व्यवस्था के उघाड़ने में उदय प्रकाश को पूर्णत: सफलता मिली हे। मोहनदास कोई मनगडद या कपोल कल्पीत रचना नहीं बल्कि समाज का यथार्थ है।'यह कोई प्रतीक कथा, रूपक या कुटाख्यान नीं है। यह तो एक बिल्कुल सपाट सा किस्सा है। बाकि सच तो यह है कि यह किस्सा भी नहीं है क्योंकि मैं हमेशा की तरह कहानी की आड़ में आपको फिरसे अपने समय और समाज की असली जिन्दगी का ब्योंरा देने बैठा हूँ।'[28]

निष्कर्षत : समकालीन कहानी परंपरा में उदय प्रकाश का विशिष्ट स्थान है। उनकी कहानियों के बारे में हिन्दी साहित्य में बहुत विवाद है- ''उदय प्रकाश की कहानियों पर बहुत सारी अलर्गल समीक्षाएँ अभीतक लिखी गई है, लिखी जा रही है।''[29] उदय प्रकाश की कोई भी कहानी प्रकाशित होती है तो वातावरण में में एक हलचल सी होने लगती है। कुछ लोग हाय-तोबा भी करते हैं। उनके विरोधक अपनी-अपनी दलिले पेशकरते हैं। मात्र उनके प्रशंसको की भी कमी नहीं है। तभी तो मुशर्रफ आलम जौकी ने उदय प्रकाश की कहानियों को निर्मल वर्मा जैसे प्रसिद्ध तथा प्रभावशाली कथाकार की पंक्ति में बिठाया है-''निर्मल वर्मा, उदय प्रकाश और आलका की फँतासी, मिश्रित कहानियों में जादुई यथार्थवाद है।'' 30 आलोचक कुछ भी कहे मात्र उदय प्रकाश चुपचाप युवा पाठकों की गोद में बैठ जाते हैं। अंतत: समकालीन कथा एवं कथाकार अपने समय के प्रति ईमानदार होते है तभी तो उदय प्रकाश अपने साहित्य के द्वारा हिन्दी साहित्य जगत को प्रकाश दे रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. उनके निवास पर लिए साक्षात्कार में 9-3-2008 2. वहीं. 4. वहीं 5. नवभारत टाईम्स में 23-7-2009 6. हंस-जनवरी 2010, पृ.87-समकालीन सृजन, संदर्भ-भारत भारद्वाज 7. हंस-1994 8. हंस-सितंबर 2007, पृ. 80 9. समकालीन हिन्दी कथा लेखिकाएँ-भूमिका, पृ.4 डॉ. रामकाली सराफ 10. वही. 11. समीक्षा-जुलाई-सिंत. 2007, पृ. 34-वेदप्रकाश अभिताभ 12. नालंदा अद्यतन कोश-सं. पुरुषोत्तम नारायण अग्रवाल, पृ. 933 13. अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश-हरदेव बाहरी, पृ. 168 14. आदर्श मराठी शब्दकोश-सं. प्र.न. जोशी, पृ. 98 15. हिन्दी राष्ट्रभाषा कोश, पृ. 1415 16. समकालीन कहानी की भूमिका-विश्वंभरनाथ उपाध्याय, पृ. 20 17. सारिका-नवंबर-1983, पृ. 69 18. दिनमान-जुलाई-अगस्त-1984, पृ.37 19. उनके निवास पर साक्षात्कार से दि. 9-3-2008 20. पॉलगोमरा का स्कूटर-उदय प्रकाश, पृ. 53 21. पल-प्रतिपल-मार्च 1998, पृ. 101 22. पॉल गोमराका स्कूटर-वारेन हे-का सांड-उदय प्रकाश-पृ.133 23. पीली छतरीवाली लड़की-उदय प्रकाश-प1. 145 24. उनके निवास पर लिए साक्षात्कार से दि. 9-3-2008 25. पहल-82-मेंगोसिल-उदय प्रकाश, पृ. 61 26. पहल-82-मेंगोसिल-उदय प्रकाश, पृ.91 27. मोहनदास-उदय प्रकाश-किसलय, पृ. 12. 29. आलोचना-जन मई 2004, शंभू गुप्ता 30. हंस-अक्तू. 2007, जारख-मुशर्रफ आलमजौकी, पृ. 84